अध्ययन सामग्री
एम. ए. सेमेस्टर 2
CC 9 UNIT 3
डॉ० मालविका तिवारी
सहायक प्राध्यापक
संस्कृत विभाग
एच. डी. जैन कॉलेज
वी. कुं. सिं. वि०, आरा

उत्तररामचरितम्

19.04.21

'उत्तरे रामचरिते भवभूतिर्विशिष्यते' इस उक्ति का समीक्षात्मक विशद निरूपण कीजिए।

'उत्तररामचरितम्' भवभूति का सर्वश्रेष्ठ नाटक है जिसमें उनकी नाट्यकला तथा कवित्व शक्ति चरम परिणति को प्राप्त हुई है। आलोचकों की मान्यता है कि उत्तररामचरित में भवभूति की कला कालिदास से भी अधिक विकसित है –

उत्तरे रामचरिते भवभूतिर्विशिष्यते।

यह भवभूति का सर्वोत्तम रूपक है। इसके सात अंकों में राम-कथा के उत्तरार्द्ध की कथा वर्णित है। इसमें भवभूति ने करुण-रस की सरिता प्रवाहित की है। करुण के अतिरिक्त वीर और शृंगार रसों की भी मार्मिक व्यंजना हुई है। ~~इसमें~~ राम के उत्तर-कालीन चरित्र को अनेक नवीन कल्पनाओं के साथ प्रकृति की गोद में दिखाया गया है। सीता के वनवास से इसकी कथा-वस्तु प्रारम्भ होती है और राम-सीता के पुनर्मिलन के साथ समाप्त हो जाती है। इसमें कवि ने 12 वर्ष के लम्बे समय की कथा प्रस्तुत की है। इसमें एकान्विति का प्रयत्न उतना नहीं है, जितना प्रभावोत्पादक दृश्यों का संयोजन करके इसे काव्यात्मक बनाने का प्रयास हुआ है।

अतः इसे नाटकीय काव्य की संज्ञा दी जा सकती है।

गार्हस्थ्य जीवन तथा प्रेम का चरम परिपाक जितना इस नाटक में हुआ है उतना संस्कृत के किसी अन्य नाटक में नहीं। नाना परिस्थितियों, भावदशाओं तथा प्राकृतिक दृश्यों का जिस कौशल और तन्मयता से यहाँ चित्रण किया गया है वह बहुत ही कम कवियों की कृतियों में मिल सकता है। नाट्य कौशल तथा उससे भी अधिक काव्य-कौशल इस नाटक की सबसे विशेषता है। प्रकृति के नाना मनोरम दृश्यों तथा बीहड़ भयावने वनों, नाना जीव-जन्तुओं, सुख, दुःख, स्नेह, दया, कारुण्य आदि के व्यञ्जना में भवभूति ने इस नाटक में अनूठी सफलता प्राप्त की है। प्रणय के चित्रण में भवभूति की समता संस्कृत का अन्य नाटककार नहीं कर सकता। राम की कर्तव्यनिष्ठा तथा सीता की अनुपम सहनशीलता एवं पवित्रता इन दो कूलों के बीच प्रवाहित हो रहा प्रणय अत्यन्त उदात्त, पवित्र तथा शालीन है। कालिदास आदि महाकवियों के स्वच्छन्द प्रणय को कर्तव्यनिष्ठा के कठोर निगड में नियन्त्रित करने के बाद भवभूति ने उसमें जो उत्कर्ष तथा शालीनता ला दी है वह इस नाटक की सबसे विशेषता है। परिस्थितियों की कठोर यातनाओं से संयमित प्रेम यहाँ चरम परिपाक को प्राप्त हुआ है।

उत्तररामचरित में नाटकीय उत्कर्ष के अतिरिक्त काव्योत्कर्ष भी स्थायी महत्त्व का है। प्रेम तथा मनोवेगों का काव्य के माध्यम से इतना प्रभावुक वर्णन यहाँ हुआ है कि पाठक और दर्शक पर इसका प्रभाव पड़े बिना नहीं रह सकता। कथानक यद्यपि रामायण से लिया गया है पर दृश्य एवं वातावरण घरेलू हैं, उनमें यथार्थता है तथा मनोवेगों एवं प्रेम का वर्णन संस्कृत साहित्य के अन्य वर्णनों की अपेक्षा अधिक यथार्थ एवं भावना से तरल है। भवभूति स्वच्छन्द वा सती प्रेम के उपासक नहीं और यह कथानक भी यद्यपि प्राचीन ग्रन्थों पर आधृत है पर मात्र आख्यान नहीं रह जाता, यह जन-साधारण के अनुभव और प्रेम की कथा है। उनका प्रेम चित्रण आध्यात्मिक होते हुए भी मानव है। उसमें

अनुभूति की सच्चाई है। भवभूति के उत्तररामचरित की सबसे बड़ी सफलता है एक आदर्श तथा बहुचर्चित एवं सम्मानित महापुरुष के प्रसिद्ध चरित्र की रक्षा करते हुए उसे मानवीय धरातल पर अधिष्ठित करना। भवभूति इसमें सुतरां सफल हुए हैं। उनके राम-सीता आदर्श चरित्र वा विष्णु लक्ष्मी होते हुए भी मानवीय स्तर के प्रेमी तथा विरही हैं। इस दृष्टि से देखने पर भवभूति का स्थान संस्कृत-नाटक-साहित्य में नितान्त ऊँचा दिखाई पड़ता है।

उत्तररामचरित में सर्वत्र गम्भीरता का दर्शन होता है। विनोदप्रियता भवभूति की प्रवृत्ति के विरुद्ध प्रतीत होता है। इनके समस्त नाटकों में विदूषक का अभाव इसी तथ्य का संकेत करता है। सारे नाटक में धीरता, गम्भीरता और शान्ति है। पर, यह शान्ति नीरव नहीं अपितु मानसिक भावावेगों तथा तड़पन से संयुक्त है।

भवभूति का प्रकृति वर्णन भी संस्कृत की परम्परागत पद्धति से भिन्न है। उत्तररामचरित में प्रकृति के सौम्य रूप का ही नहीं उसके रौद्र रूप का भी दर्शन होता है। संस्कृत के कवि विकसित कदम्ब-अशोक और शरत्कालीन तथा वासन्ती विकास पर ही रीझते प्रतीत होते हैं पर महाकवि भवभूति ने उसके कर्कश और भयावह रूप का भी उसी तन्मयता, उसी अनुभूति और उसी गम्भीरता के साथ वर्णन किया है।

भवभूति के पात्रों में धीरता, गम्भीरता तथा तरलता भी है। सीता और राम का चरित्र-चित्रण दैवी धरातल पर करने पर भी कवि ने उन्हें पूरा मानवीय बनाया है। राम जहाँ प्रजारञ्जन के लिए निरपराधिनी पतिप्राणा एवं शुद्धाचरण सीता का त्याग करते हैं वहीं उनके लिए फूट-फूट कर रोते भी हैं — 'अपि ग्रावा रोदित्यपि दलति वज्रस्य हृदयम्।' एक ओर जहाँ उनमें कठोरता की चरम सीमा दिखाई पड़ती है वहीं सहृदया प्राणप्रिया पत्नी के लिए करुण-विलाप भी। उनका हृदय ऊपर से मिट्टी से लिपे पात्र जैसा है जो अवाँ में तप रहा है —

'पुटपाकप्रतीकाशो रामस्य करुणो रसः।' धीरता-गम्भीरता-वश भले ही वे लोक के सामने अपने मानसिक दुःख को अभिव्यक्त न करें पर हृदय तो उससे झुलस ही गया है। दण्डकारण्य में जाने पर वे पूर्व स्मृतियाँ जागरूक हो जाती हैं, उनके धैर्य का बाँध टूट जाता है और वे विलख पड़ते हैं। कहाँ वैसी कठोरता और कहाँ ऐसा विलाप? महज्जनों का स्वभाव ही दुरवगाह्य होता है—

वज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमादपि।
लोकोत्तराणां चेतांसि को नु विज्ञातुमर्हति॥

सीता के चरित्र को कवि ने और उत्कर्ष को प्राप्त कराया है। उनके सम्पूर्ण जीवन में त्याग और तपस्या है। भवभूति की सीता वाल्मीकि की सीता से भी पावन चरित्र रखती हैं। जहाँ रामायण की सीता में स्वाभिमान की दीप्ति है वहीं भवभूति की सीता में त्याग और तितिक्षा की स्निग्ध-शीतल कान्ति है। उत्तररामचरित में सीता का चरित्र इतना उदात्त तथा प्राञ्जल है कि वे वन में राम को कटु वचन सुना रही वासन्ती के प्रति ही अपनी प्रतिकूल प्रतिक्रिया प्रदर्शित करती हैं। सारे अपमानों और दुःखों को भुलाकर वे, जब कभी राम अचेत होते हैं उन्हें अपने कर-स्पर्श से सचेत करती हैं। अन्य पात्रों का चित्रण भी भवभूति ने अत्यन्त मर्यादित रूप से किया है।

इस नाटक में कथानक भी भवभूति के अन्य नाटकों की अपेक्षा अधिक परिपुष्ट है तथा उसके विभिन्न अवयव परस्पर सम्बन्ध हैं। सारा कथानक फल प्राप्ति की ओर अभिमुख है। प्रथम अंक की घटनाओं का सम्बन्ध सातवें अंक तक की घटनाओं तक व्याप्त है। प्रस्तावना में ही कवि ने सीता-त्याग का संकेत कर दिया है—'यथा स्त्रीणां तथा वाचां साधुत्वे दुर्जनो जनः'। प्रथम अंक में सीता त्याग के अवसर पर पृथ्वी से कहते हैं कि वे सीता की देखभाल करें। इसी वचन

को सातवें अंक में पृथ्वी दुहराती हुई सीता को राम के लिए सौंपती है। वे कहती हैं कि पहले राम ने जो कहा था उसका उन्होंने निर्वाह कर दिया। भवभूति ने बड़ी सावधानी से 'उत्तर-रामचरित' को सुखान्त बनाया है। इसमें उन्होंने प्रथित इतिवृत्त में परिवर्तन भी किया है। रामायण में सीता-त्याग के बाद फिर राम और सीता का मिलन नहीं होता। पर, भवभूति ने इस दुःखान्त प्रसङ्ग को बड़ी कुशलता से बचाया है। भारतीय नाट्य शास्त्र दुःखान्त नाटक के पक्ष में नहीं, सुखान्त नाटक ही होने चाहिए। दर्शक और सामाजिक आनन्द लेने के लिए ही तो नाटक देखने जाते हैं। स्थायी दुःख में सराबोर होकर लौटना ठीक नहीं। वह भी सदाचारी और साधु पुरुष की चरम परिणति यदि दुःखमय हो तो यह तो सुतरां निन्दित बात होगी। सीता जैसी पतिव्रतप्राणा, साधुशीला स्त्री की चरम परिणति यदि दुःखमयी हो तो इसे कौन पसन्द करेगा? नैतिकता का आदर्श ही ढह जाएगा। तब धर्म करेगा ही कौन? महाभारतकार ने तो 'यतो धर्मः ततो जयः' कहा, पर, यदि धार्मिक राम और सीता को अन्ततः दुःख उठाना पड़े तो इससे बुरा क्या हो सकता है? अलंकार-शास्त्रियों ने भी नाटक को दुःखान्त नहीं होना चाहिए' कहा है। भवभूति ने कथानक बदल दिया। एक ही तीर से दो लक्ष्य सधे — एक तो नाट्यशास्त्र के सिद्धान्त का निर्वाह, दूसरे नैतिकता की जय तथा सामाजिकों का परितोष। काव्य-न्याय तथा काव्य कला का यह सुन्दर निर्वाह है। सप्तम अंक (गर्भ नाटक) में कवि ने वियोग में ही संयोग करा दिया। कितना बड़ा यह कौशल है। दर्शक चले हैं सीता-राम का वियोग देखने पर हो जाता है संयोग। वे सदाचार, धर्म और नैतिकता की जय देखकर लौटते हैं। साधु पुरुषों का अन्त भला होता है- धर्मो रक्षति रक्षितः।

भवभूति करुण-रस के आचार्य हैं। सारा नाटक करुणा की छाया से अभिभूत है। राम-सीता सामान्य पात्र नहीं करुणा की जीती-जागती मूर्तियाँ हैं। उनका सारा जीवन ही करुणामय है। करुण रस इस नाटक का प्रधान या अङ्गी रस है अन्य रस अङ्ग हैं। भवभूति अन्य रसों की वर्णना

में भी सिद्धहस्त हैं।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि भवभूति में एक सच्चे नाटककार की सम्पूर्ण विशेषताएँ मिलती हैं। जैसे - उर्वरा कल्पना शक्ति, उदात्त एवं सुन्दर वस्तु और भावनाओं का मूल्यांकन, सफल चरित्र-चित्रण की अद्भुत क्षमता, पात्रों के मन में विभिन्न परिस्थितियों एवं रूपों में होने वाली प्रतिक्रिया का ज्ञान और अद्भुत अनुकूल वर्णन शक्ति, उसके काव्य की गति, लय एवं संगीतात्मक अभिव्यक्ति।

कुल मिलाकर 'उत्तररामचरित' नाट्यशास्त्रीय आधार पर लिखा गया तथा मनुष्य के मर्मस्थल पर प्रभाव डालने वाली अद्भुत कलात्मकता से युक्त नाटक है। यदि तुलना के आधार पर भवभूति के उत्तररामचरित का विवेचन इस रूप में किया जाये तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी — यदि कालिदास का अभिज्ञानशाकुन्तल कविता कामिनी का कुंकुम-रोली से चर्चित सुन्दर मस्तक है तो उत्तररामचरित उसका सुन्दर सुकोमल भावों तथा करुणापूर्ण द्रवकता से युक्त हृदय है। 'उत्तररामचरितम्' भवभूति की रचनाओं में ही सर्वश्रेष्ठ नहीं है, अपितु संस्कृत भाषा के सभी नाटकों की अपेक्षा विशिष्ट है। इसी आधार पर कहा जाता है —

'उत्तरे रामचरिते भवभूतिर्विशिष्यते।'